महा मृत्युंजय स्तोत्रं

महामृत्युंजयस्तोत्रं

रुद्रं पशुपतिं स्थाणुं नीलकंठमुमापतिं |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति || 1 ||

नीलकंठं कालमूर्तिं कालज्ञं कालनाशनं |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति || 2 ||

नीलकंठं विरूपाक्षं निर्मलं निलयप्रदं |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति || 3 ||

वामदेवं महादेवं लोकनाथं जगद्गुरुं |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति || 4 ||

देवदेवं जगन्नाथं देवेशं वृषभध्वजं |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति || 5 ||

गंगाधरं महादेवं सर्वाभरणभूषितं |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति || 6 ||

त्र्यक्षं चतुर्भुजं शांतं जटामकुटधारिणं |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति || 7 ||

भस्मोद्धूळितसर्वांगं नागाभरणभूषितं |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति || 8 ||

अनंतमव्ययं शांतं अक्षमालाधरं हरं |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति || 9 ||

आनंदं परमं नित्यं कैवल्यपददायिनं |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति || 10 ||

अर्धनारीश्वरं देवं पार्वतीप्राणनायकं |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति || 11 ||

प्रळयस्थितिकर्तारमादिकर्तारमीश्वरं |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति || 12 ||

व्योमकेशं विरूपाक्षं चंद्रार्धकृतशेखरं |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति || 13 ||

गंगाधरं शशिधरं शंकरं शूलपाणिनं |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति || 14 ||

अनाथः परमानंदं कैवल्यःपदगामिनं |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति || 15 ||

स्वर्गापवर्गदातारं सृष्टिस्थित्यंतकारणं |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति || 16 ||

कल्पायुर्देहि मे पुण्यं यावदायुररोगतां |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति || 17 ||

शिवेशानां महादेवं वामदेवं सदाशिवं |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति || 18 ||

उत्पत्तिस्थितिसंहारकर्तारमीश्वरं गुरुं |
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति || 19 ||

मार्कंडेयकृतं स्तोत्रं यः पठेच्छिवसन्निधौ |
तस्य मृत्युभयं नास्ति नाग्निचौरभयं क्वचित् || 20 ||

शतावर्तं प्रकर्तव्यं संकटे कष्टनाशनं |
शुचिर्भूत्वा पठेत् स्तोत्रं सर्वसिद्धिप्रदायकं || 21 ||

मृत्युंजय महादेव त्राहि मां शरणागतं |
जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबंधनैः || 22 ||

तावकस्त्वद्गतः प्राणस्त्वच्चित्तोऽहं सदा मृड |
इति विज्ञाप्य देवेशं त्र्यंबकाख्यमनं जपेत् || 23 ||

नमः शिवाय सांबाय हरये परमात्मने |
प्रणतक्लेशनाशाय योगिनां पतये नमः || 24 ||